



डी ओ जी आर समाचार DOGR News

खंड 19 | अंक 1 | जनवरी-जून, 2015
Volume 19 | No. 1 | January-June, 2015

इस अंक में / Inside

अनुसंधान उपलब्धियां

Research Highlights

- लेह व लद्दाख से एलियम जननद्रव्य
Allium germplasm from Leh and Ladakh
- एलियम प्रजातियों के जैव उपयोगी गंधक यौगिक
Bioactive sulphur compounds in Allium species
- भीमा सफेद-एक नई किस्म
Bhima Safed- a new variety
- सेट के माध्यम से प्याज की खेती के लिए किस्में
Varieties for onion cultivation through sets
- भीमा पर्पल-एक सफल गाथा
Bhima Purple - a success story

प्याज दिवस / Onion Day

संस्थागत गतिविधियां / Institutional Activities

प्रशिक्षण का आयोजन / Trainings organized

प्रदर्शनियों में सहभाग

Participation in Exhibitions

खेलकूद प्रतियोगिता में सहभाग

Participation in Sports Tournament

प्याज की खेती करने वाले किसान ने प्राप्त किया अभिनव किसान पुरस्कार

Onion Farmer bags Innovative Farmer Award

कार्मिक / Personnel

संकलन एवं संपादन

Compiled and Edited by

डॉ. शैलेन्द्र शं. गाडगे/Dr. Shailendra S. Gadage

डॉ. प्रीती सिंह/Dr. Pritee Singh

डॉ. कल्याणी गोरेपति/Dr. Kalyani Gorrepati

डॉ. जय गोपाल/Dr. Jai Gopal

प्रकाशक / Published by

डॉ. जय गोपाल, निदेशक/Dr. Jai Gopal, Director

निदेशक की ओर से

From Director's Desk



प्रिय पाठको,

Dear Readers,

पिछले रबी मौसम (2014-15) के दौरान कई क्षेत्रों में लंबी सर्दियों के कारण निरंतर कम तापमान की वजह से प्याज फसल में तोर वाले कंदों का प्रकोप ज्यादा था। प्याज की कंद फसल में तोर आना (फूल लगना) अवांछनीय हैं, क्योंकि यह कंद विकास को कम कर कंद उपज घटाता है। तोर वाले कंद रेशेदार एवं हल्के होते हैं, जो की खाने के लिए अयोग्य होते हैं। फसल परिपक्व होने के निकट कम तापमान की वजह से यह समस्या पछेती खरीफ फसल में रबी की तुलना में अधिक होती है। तोर सहिष्णु किस्में लगाना इस समस्या को कम करने के लिए सबसे उचित तरीका है। भाकृअनुप-प्यालअनुनि द्वारा विकसित 'भीमा शक्ति' ऐसी ही एक किस्म है। यह किस्म पछेती खरीफ एवं रबी दोनों मौसमों में लगाने के लिए उपयुक्त है। जिन किसानों ने यह किस्म लगाई थी, वहां तोर की समस्या कम रही। इस समस्या के महत्व को ध्यान में रखते हुए भाकृअनुप-प्यालअनुनि ने एक तकनीकी पुस्तिका 'बोल्टिंग इन अनियन' (प्याज में तोर आना) प्रकाशित की है। किसान

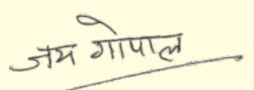
During previous *rabi* season (2014-15), onion bulb crop had high incidence of bolting as it was exposed to continuous low temperatures due to prolonged winters in many regions. Bolting (flowering) in bulb onion crop is undesirable as it reduces bulb yield by reducing the development of bulbs. Bolters have fibrous and light bulbs, which are unfit for consumption. This problem is generally more in late *kharif* than *rabi* crop due to lower temperatures in late *kharif* near harvesting time. The problem can be best managed by growing bolting tolerant varieties. 'Bhima Shakti' is one of such varieties developed by ICAR-DOGR. It is suitable for cultivation both in late *kharif* and *rabi* seasons. Farmers who grew this variety had little bolting problem. Keeping in view the importance of this problem, ICAR-DOGR has brought out a technical bulletin on 'Bolting in Onion'.

और अन्य हितधारक इस पुस्तिका में दी गई जानकारी का लाभ उठा सकते हैं, जिसमें तोर आने के संबंध में सभी पहलुओं को शामिल किया गया है। इस पुस्तिका को भाकृअनुप-प्यालअनुनि से व्यक्तिगत या डाक द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

अखिल भारतीय प्याज एवं लहसुन अनुसंधान नेटवर्क परियोजना की वार्षिक समूह बैठक जो दावणगिरी (कर्नाटक) में दिनांक 6-7 फरवरी, 2015 को हुई, उसमें निदेशालय द्वारा विकसित प्याज किस्म 'भीमा सफेद' को जारी करने की सिफारिश की गई। यह सफेद किस्म छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान और तमिलनाडु में खेती के लिए उपयुक्त है। अन्य तीन किस्में (भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड और भीमा श्वेता) सेट उत्पादन एवं खरीफ में वर्षा के कारण जहां रोपण पौध फसल सफलतापूर्वक नहीं उगाई जा सकती, वहां सेट के माध्यम से प्याज फसल को उगाने के लिए पहचानी गई। एक लहसुन किस्म 'भीमा पर्पल' प्यालअनुनि की सफल गाथा बनी है, क्योंकि इस किस्म को लगाकर किसान औसतन एक लाख रुपये प्रति एकड़ का शुद्ध लाभ अर्जित कर रहे हैं।

कई प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रदर्शनियां एवं प्रदर्शन आयोजित किए गए, जिसमें कुछ नंदुरबार आदिवासी इलाके में भी थे। हमने दिनांक 16 जून 2015 को भाकृअनुप-प्यालअनुनि के स्थापना दिवस को 'प्याज दिवस' के रूप में मनाया। इस कार्यक्रम में 400 से अधिक किसानों ने भाग लिया, जिन्हें विभिन्न कंपनियों और संगठनों द्वारा प्रदर्शित उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों को देखने का मौका मिला। उन्हें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रश्नोत्तरी सत्र के माध्यम से प्याज एवं लहसुन की खेती में सुधारित विधियों के संबंध में जानकारी दी गई। एक प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 20 किसानों द्वारा प्याज कंदों को प्रदर्शित किया गया तथा तीन सर्वोत्तम प्रविष्टियों को सम्मानित किया गया।

इस छः माही में हमने 'कंदिका'-हिंदी राजभाषा पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित किया, जिसे डॉ. एन. के. कृष्ण कुमार, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान) द्वारा 6 जनवरी, 2015 को विधिवत जारी किया गया। 'विषाणु मुक्त लहसुन बीज प्रजनक के उत्पादन' के लिए एक नई टिशू कल्चर इकाई स्थापित की गई, जिसका उद्घाटन भी उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान) द्वारा संस्थान के इस दौरे के दौरान किया गया। इस प्रकार आलोच्य अवधि काफी घटनाप्रद एवं उत्पादक रही। हमेशा की तरह, हम किसानों के लिए कार्यक्रमों के आयोजन और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने के प्रयास जारी रखेंगे। इससे भी बेहतर करने के लिए हम आपके सुझाव तथा समर्थन के लिए तत्पर हैं।


जय गोपाल

Farmers and other stakeholders can take advantage of the information presented in this bulletin, which covers all relevant aspects of bolting. The bulletin can be obtained from ICAR-DOGR in person or by post.

Onion variety 'Bhima Safed' developed by ICAR-DOGR was recommended for release in the annual group meeting of All India Network Project on Onion and Garlic held at Davengere (Karnataka) on 6-7 February, 2015. This white onion variety is suitable for cultivation in Chhatisgarh, Gujarat, Karnataka, Madhya Pradesh, Maharashtra, Orissa, Rajasthan and Tamil Nadu. Three other varieties (Bhima Super, Bhima Dark Red and Bhima Shweta) have been identified for sets production and raising onion crop through sets in *kharif* in areas where due to heavy rains seedling transplant crop cannot be raised successfully. 'Bhima Purple' a garlic variety has become a success story of DOGR as the farmers growing this variety are earning a net profit of Rs. one lakh per acre on average.

Besides organizing a number of training programmes, exhibitions and demonstrations for the farmers including in the tribal belt of Nandurabar, we celebrated the Foundation day of ICAR-DOGR as 'ONION DAY' on 16th June 2015. More than 400 farmers attended this programme where they had the opportunity to visit the products and technologies exhibited by various companies and organizations. They were also updated about the improved cultivation practices of onion and garlic through lectures as well as question-answer session. A competition of onion bulbs displayed by 20 farmers was also held and the best three entries were awarded.

We also brought out the inaugural issue of 'Kandika'- the Hindi Rajbhasha Patrika and it was duly released by Dr. NK Krishna Kumar, DDG (HS) during his visit to this institute on 6th January, 2015. A new tissue culture unit for 'Production of virus-free garlic seed- propagules' was also inaugurated by the DDG (HS) during this visit. The period under report was thus quite eventful and productive. As usual, we will continue to organize various events for the farmers and also strive to promote R&D activities for achieving the set goals. We look forward to your input and support to do still better.


Jai Gopal

अनुसंधान उपलब्धियां

लेह व लद्दाख से एलियम जननद्रव्य

लेह व लद्दाख से एलियम जननद्रव्य के संकलन हेतु एक अन्वेषण किया गया। लद्दाख, समुद्र तल से 3500 मीटर की ऊंचाई पर अत्यधिक ऊंचाई वाला एक पर्वतीय क्षेत्र है और इसे आमतौर पर भारत के शीत रेगिस्तान ट्रांस हिमालयन क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। अत्यधिक सर्दी वाला लम्बा मौसम होने के कारण यहां कृषि मौसम अपेक्षाकृत छोटा होता है जो कि आमतौर पर मई से सितम्बर तक ही सीमित रहता है। पनामिक, डिस्कित, लेह, नुब्रा तथा समुर सहित लेह व लद्दाख के भिन्न भागों से एलियम जननद्रव्य के लिए अन्वेषण किए गए। अधिकांश गांवों में केवल 1 अथवा 2 प्राचीन किस्में ही पाई गईं। वन्य प्रजाति ए. ग्रैफिथियेनम को स्थानीय बोलचाल की भाषा में कोचे; ए. ऑरीकुलेटम को काजे; ए. ट्यूबरोसम को रिकोक; ए. कसैंग्विनियम को तंगौर; प्रचलित प्याज (ए. सीपा) को चोंग तथा लहसुन (ए. सैटाइवम) को कोप्पा कहा जाता है। इन जननद्रव्य का संकलन किया गया। संकलित नमूनों को तालिका 1 में सूचीबद्ध किया है।

Research Highlights

Allium germplasm from Leh and Ladakh

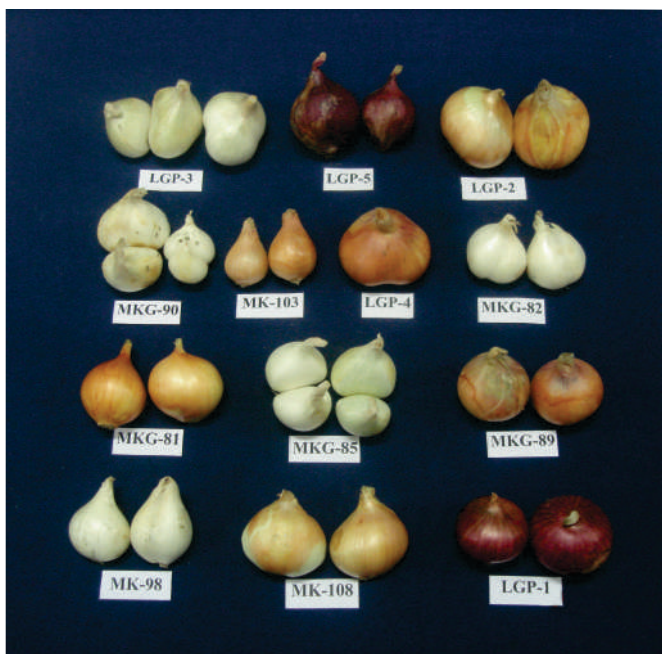
An exploration was undertaken in Leh and Ladakh for *Allium* germplasm collection. Ladakh is a high altitude and mountainous region, situated at an altitude of 3500 m above mean sea level and is popularly known as cold desert trans-Himalayan region of India. Due to the extremely long winter, the agricultural season is short; limited generally from May to September. Different parts of Leh and Ladakh including Panamik, Diskit, Leh, Nubra and Samur were explored for *Allium* germplasm. In most of the villages only 1 or 2 primitive cultivars were found. Wild species *A. graffithianum* known as Koche in local parlance, *A. auriculatum* known as Kaje, *A. tuberosum* known as Rikok, *A. consaguineum* known as Tanguor, common onion (*A. cepa*) known as Chong and garlic (*A. sativum*) known as Koppa were collected. The samples collected are listed in Table 1.

अमर जीत गुप्ता एवं पी.एस. मेहता / Amar Jeet Gupta and P.S. Mehta

तालिका 1. लेह व लद्दाख से संकलित जननद्रव्य

Table 1. Germplasm collection from Leh and Ladakh

प्रजाति (खेती योग्य एवं वन्य) Species (Cultivated and wild)	प्राप्तियों की संख्या No. of samples
प्याज (एलियम सीपा) / Onion (<i>Allium cepa</i>)	13
लहसुन (ए. सैटाइवम) / Garlic (<i>A. sativum</i>)	2
ए. ग्रैफिथियेनम / <i>A. graffithianum</i>	2
ए. ऑरीकुलेटम / <i>A. auriculatum</i>	4
ए. ट्यूबरोसम / <i>A. tuberosum</i>	2
ए. कसैंग्विनियम / <i>A. consaguineum</i>	1
ए. एट्रोसैंग्विनियम / <i>A. atrosanguineum</i>	1



लेह व लद्दाख में प्याज जननद्रव्य एवं स्थानीय लहसुन में भिन्नता
Variability in onion germplasm and local garlic in Leh and Ladakh

एलियम प्रजातियों के जैव उपयोगी गंधक यौगिक

प्याज और लहसुन जीनस *एलियम* के सदस्य हैं जिसमें 600 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इन पौधों को प्राचीन काल से भोजन के लिए और औषधीय प्रयोजनों में उपयोग किया जाता है। *एलियम* प्रजातियों के औषधीय गुणों का मुख्य कारक है जैविक गंधक पदार्थों की अधिकता क्योंकि इनमें काफी अधिक मात्रा में थियोसल्फिनेट्स एवं अन्य गंधक यौगिक पाए जाते हैं। थियोसल्फिनेट्स में जीवाणुरोधी एवं कवकरोधी गुण होते हैं और अन्य रोगों में जैसे हृदय रोग, वसा के जमाव, लिपोप्रोटीन का असंतुलन, उच्च रक्तचाप और कैंसर के खिलाफ भी इनका सकारात्मक औषधीय प्रभाव है। *एलियम* प्रजातियों के कुल चौतीस वंशक्रमों का आकलन एलिसिन तथा अन्य थियोसल्फिनेट्स के लिए किया गया। पत्तियों का विश्लेषण LC-MS/MS उपकरण द्वारा किया गया। इन वंशक्रमों में सुखे भार के आधार पर एलिसिन, एलायल मिथायल थियोसल्फिनेट्स और एलायल ट्रान्स 1 प्रोपेनॉयल थियोसल्फिनेट्स की मात्रा क्रमशः 0-2941 पीपीएम, 0-3549 पीपीएम एवं 0-396 पीपीएम के बीच थी। एलिसिन और अन्य थियोसल्फिनेट्स की उच्च मात्रा वाली *एलियम* प्रजातियाँ औषधीय प्रयोजनों में प्रयोग की जा सकती हैं (तालिका 2)।

तालिका 2. एलिसिन और अन्य थियोसल्फिनेट्स की उच्च मात्रा वाली *एलियम* प्रजातियाँ

Table 2. *Allium* species with high allicin and other thiosulphinates compounds

एलियम प्रजातियाँ <i>Allium</i> species	एलिसिन Allicin (ppm)	एलासल मिथायल थियोसल्फिनेट्स Allylmethyl thiosulphinate (ppm)	एलासल ट्रान्स 1 थियोसल्फिनेट्स Allyl trans 1 propenyl thiosulphinate (ppm)	कुल Total (ppm)
एलियम ट्यूबरोसम बवांग कुकाई <i>Allium tuberosum</i> Bawang kucai	329	3549	30	3908
एलियम ट्यूबरोसम/ <i>Allium tuberosum</i>	326	3448	31	3805
एलियम सटाइवम/ <i>Allium sativum</i>	2941	238	396	3575
एलियम ट्यूबरोसम रॉटल एक्स स्पर <i>Allium tuberosum</i> Rottl. ex spr.	201	3295	75	3571



एलियम ट्यूबरोसम बवांग कुकाई
Allium tuberosum Bawang kucai



एलियम ट्यूबरोसम
Allium tuberosum



एलियम सटाइवम
Allium sativum



एलियम ट्यूबरोसम रॉटल एक्स स्पर
Allium tuberosum Rottl. ex spr.

थियोसल्फोनेट्स की उच्च मात्रा वाली एलियम प्रजातियां
Allium species with high content of thiosulphinate compounds

प्रिती सिंह एवं जय गोपाल /Pritee Singh and Jai Gopal

भीमा सफेद – एक नई किस्म

दिनांक 6-7 फरवरी 2015 को, दावणगिरी, कर्नाटक में आयोजित अखिल भारतीय प्याज एवं लहसुन अनुसंधान नेटवर्क परियोजना की वार्षिक समूह बैठक में भाकृअनुप-प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय द्वारा विकसित सफेद प्याज के वंशक्रम की सिफारिश की गई। इस वंशक्रम 'एनआरसीडब्ल्यूओ-3' को 'भीमा सफेद' नाम दिया गया। भीमा सफेद किस्म छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान एवं तमिलनाडु में खेती के लिए उपयुक्त है। यह मध्यम परिपक्वता अवधि (110-120 दिन) वाली किस्म है जिसमें मुख्यतः 70-80 ग्राम भार वाले सफेद रंग के गोलाकार से अंडाकार कंद पाए जाते हैं। इसमें 11-12 प्रतिशत कुल ठोस घुलनशील पदार्थ पाया जाता है और इसलिए यह टेबल पर परोसने तथा प्रसंस्करण दोनों प्रयोजनों के लिए उपयुक्त है। सुझाए गए क्षेत्र में बहु-स्थानिक परीक्षणों में इसकी औसत उपज 185 क्वि./हेक्टेयर थी। इसमें जोड़ एवं तोर वाले कंदों की उपस्थिति 5 प्रतिशत से कम दर्ज की गई।

Bhima Safed - a new variety

In Annual Group Meeting of All India Network Research Project on Onion & Garlic at Davengere, Karnataka on 6-7th February, 2015, white onion line developed by the ICAR-Directorate of Onion & Garlic Research, Rajgurunagar has been recommended for release. This line 'NRCWO-3' has been christened as 'Bhima Safed'. It is suitable for cultivation in Chhatisgarh, Gujarat, Karnataka, Madhya Pradesh, Maharashtra, Odisha, Rajasthan, and Tamil Nadu. This is a medium maturing (110-120 days) variety having white, round to oval bulbs of mainly 70-80 g. It has 11-12% TSS and is thus suitable both for table and processing. Its average yield in multilocal trials in the recommended zones was 185 q/ha. It has less than 5% doubles and bolters.



भीमा सफेद / Bhima Safed

सेट के माध्यम से प्याज की खेती के लिए किस्में

अखिल भारतीय प्याज एवं लहसुन अनुसंधान नेटवर्क परियोजना की छठी वार्षिक समूह बैठक में छः स्थानों से संकलित तीन वर्षों के आंकड़ों के आधार पर भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड तथा भीमा श्वेता किस्म सेट उत्पादन के लिए पहचानी गई। इनका खरीफ के दौरान प्याज की व्यावसायिक फसल उगाने के लिए उत्पादित सेटों का उपयोग कर सकते हैं। भारत के मध्य एवं उत्तरी भागों में जहां कि खरीफ के दौरान रोपण पौध से फसल पैदा करना को तैयार करना मुश्किल भरा कार्य होता, सेटों से फसल को सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। रोपण-पौध फसल की तुलना में यह फसल जल्दी परिपक्व होती है।

Varieties for onion cultivation through sets

In 6th Annual Group Meeting of AINRPOG, on the basis of three years data from six locations, Bhima Super, Bhima Dark Red and Bhima Shweta have been recommended for sets production. The sets produced can be used for raising commercial onion crop during *Kharif*. In central and northern parts of India, where raising of seedling transplant crop is difficult during *kharif*, crop can be successfully raised from sets. This crop matures earlier than seedling transplant crop.



प्याज किस्मों के सेट तथा कन्द
Sets and bulbs of onion varieties

भीमा पर्पल – एक सफल गाथा

भाकृअनुप-प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय (प्यालअनुनि), राजगुरुनगर द्वारा विकसित उच्च उपज वाली लहसुन की एक किस्म भीमा पर्पल महाराष्ट्र और आसपास के राज्यों में सफलता की कहानी बन चुकी है। इस किस्म की सिफारिश 29-30 अप्रैल 2011 के दौरान ऊटी (टीएनएयू, कोयंबटूर) में आयोजित अखिल भारतीय प्याज एवं लहसुन अनुसंधान नेटवर्क परियोजना की द्वितीय वार्षिक समूह बैठक में की गई थी। यह किस्म आंध्र प्रदेश, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंजाब और उत्तर प्रदेश में खेती के लिए उपयुक्त पाई गई थी। यह किस्म रोपण के 135-140 दिनों बाद परिपक्व होती है और हल्के बैंगनी रंग की है। इसमें अच्छी भण्डारण क्षमता होती है। यह कीटों और पर्णिय रोगों के

Bhima Purple – a success story

Bhima Purple a high yielding garlic variety developed by the ICAR-Directorate of Onion and Garlic Research (DOGR), Rajgurunagar has become a success story in Maharashtra and adjoining states. This variety had been recommended at national level in 2nd Annual Group Meeting of AINPORG held at Ooty (TNAU, Coimbatore) during 29-30 April, 2011 for cultivation in Andhra Pradesh, Bihar, Delhi, Haryana, Karnataka, Maharashtra, Punjab and Uttar Pradesh. It matures in 135-140 days after planting and has light purple bulbs with good storability. It is also field tolerant to thrips and foliar diseases. Mr. Vishnu Ramchandra Jare, a farmer

प्रति प्रक्षेत्र सहनशील है। बहिरवाडी, अहमदनगर (महाराष्ट्र) के एक किसान श्री. विष्णु रामचंद्र जरे ने 2007 में भीमा पर्पल के मातृकंद प्यालअनुनि से खरीदे और फसल को प्यालअनुनि द्वारा सिफारिश की गई प्रौद्योगिकी के अनुसार उगाया। उन्होंने विभिन्न लहसुन किस्मों के साथ परिक्षण किया तथा भीमा पर्पल को उपज में सर्वोत्तम पाया। गुणन के बाद उन्होंने इसे पिछले छह सालों में वाणिज्यिक फसल के रूप में उगाया और एक समान आकार एवं रंग के कंदों की अभूतपूर्व 40 क्विंटल/एकड़ शुद्ध उपज प्राप्त की। लहसुन कंद बीज के रूप में 80-100 रुपये प्रति कि. ग्रा. की दर से दुसरे किसानों को बेचकर 2.0 लाख रुपये एकड़ का शुद्ध लाभ उन्होंने अर्जित किया। जेऊर, अहमदनगर से एक और किसान श्रीमती लता अर्जुन कोंठीविरे के साथ वह भीमा पर्पल का लगातार गुणन कर रहे हैं। सन 2014-15 में दोनों किसानों ने भीमा पर्पल को लगभग 40 एकड़ में लगाया और उससे मिले कंदों को महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात एवं मध्य प्रदेश के किसानों को बीज के रूप में सीधे बेच दिया। अब यह प्रजाति विभिन्न राज्यों में 600 एकड़ से अधिक जमीन पर उगाई जा रही है। अधिकांश किसान भीमा पर्पल की खेती करके अक्सर 1.0 लाख रुपये/एकड़ से अधिक शुद्ध लाभ अर्जित कर रहे हैं। श्री. जरे जो लहसून् की खेती में यथार्थवादी उपलब्धियों के लिए दिवंगत वसंतराव नाईक कृषि गौरव पुरस्कार (2012) एवं महिन्द्रा समृद्धि भारत कृषि पुरस्कार (2013) से सम्मानित है अपनी उपलब्धियों का श्रेय प्यालअनुनि को देते हैं।

from Bahirwadi, Ahmednagar (Maharashtra) had purchased 1 kg mother bulbs of Bhima Purple from DOGR in 2007 and raised garlic crop as per DOGR recommended technology. He conducted trial with different garlic varieties and found Bhima Purple to be the best yielder. After multiplication he has raised commercial crop in last six years and obtained a record net yield of 40 q/acre of uniform bulb shape and colour. He earned a net profit of Rs 2.0 lakh/acre by selling garlic bulbs @ Rs. 80-100/kg as seed to other farmers. He is continuously multiplying Bhima Purple along with another farmer Mrs. Lata Arjun Konthivire from Jeur, Ahmednagar. In 2014-15, both the farmers planted Bhima Purple in about 40 acres and harvested bulbs were sold as seed directly to different farmers from Maharashtra, Karnataka, Gujarat and Madhya Pradesh. This variety is now grown over 600 acres in different states. Most of the farmers are often earning a net profit of more than Rs. 1.0 lakh/acre by cultivating Bhima Purple. Mr. Jare who is the recipient of Late Vasantrao Naik Krushi Bhushan Award (2012) and Mahindra Samriddhi India Agri Award (2013) for his realistic achievements in cultivation of garlic gives due credit to DOGR for his achievements.



जय गोपाल, अमर जीत गुप्ता, विजय महाजन एवं शैलेन्द्र गाडगे
Jai Gopal, Amar Jeet Gupta, Vijay Mahajan and Shailendra Gadge

प्याज दिवस

भाकृअनुप-प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, राजगुरुनगर ने अपना 18 वां स्थापना दिवस 16 जून 2015 को प्याज दिवस के रूप में मनाया। कार्यक्रम में 400 से अधिक किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रदर्शनियां भी आयोजित की गईं, जिनमें 16 कंपनियों और 2 कृषि

Onion Day

ICAR-Directorate of Onion and Garlic Research, Rajguruangar celebrated its 18th Foundation Day as 'Onion Day' on 16th June 2015. The programme was attended by more than 400 farmers. Exhibitions were also arranged in

विज्ञान केंद्रों ने भाग लिया। प्यालअनुनि की किस्मों और प्रौद्योगिकियों को भी प्रदर्शित किया गया। प्याज कंदों के प्रदर्शन पर एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें 20 किसानों ने भाग लिया और तीन प्रविष्टियों का चयन इस उद्देश के लिए गठित एक समिति द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. वाई. एस. नेरकर, पूर्व कुलपति, एमपीकेवी, राहुरी तथा सह अध्यक्षता डॉ. जय गोपाल, निदेशक, प्यालअनुनि द्वारा की गई। इस अवसर पर श्री. सूर्यकांत पलांडे, पूर्व विधायक एवं सदस्य, आरएसी-आईएमसी, प्यालअनुनि, श्री. प्रताप खांडेभराड, संस्थापक, पी. के. प्रतिष्ठान एवं सदस्य, आरएसी-आईएमसी, प्यालअनुनि और डॉ. एस. डी. सावंत, निदेशक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे सम्माननीय अतिथी थे। निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एस. एस. गाडगे द्वारा प्याज की खेती पर व्याख्यान दिया गया। एक प्रश्नोत्तरी सत्र भी आयोजित किया गया। प्याज प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। प्यालअनुनि के दो सेवानिवृत्त कर्मचारियों को भी उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।



प्याज दिवस पर विचार-विमर्श
Onion Day Deliberations

which 16 companies and 2 KVKs participated. Varieties and technologies of DOGR were also exhibited. A competition on display of onion bulbs was also held in which 20 farmers participated and top three entries were selected by a committee constituted for this purpose. The programme was chaired by Dr. Y.S. Nerkar, Ex-Vice Chancellor, MPKV, Rahuri and co-chaired by Dr. Jai Gopal, Director, DOGR. Shri Suryakant Palande, Ex-MLA & Member RAC-IMC, DOGR, Shri Pratap Khandebharad, Founder, P.K. Foundation & Member, RAC-IMC, DOGR and Dr. S.D. Sawant, Director, NRC Grapes, Pune were the guests of honour at this occasion. A lecture on onion cultivation was delivered by Dr. S. S. Gadage, Senior Scientist of the Directorate. A Question-Answer session was also held. The winners of the onion competition were awarded. Two retired employees of DOGR were also felicitated for their services to the DOGR.



प्याज दिवस पर प्रदर्शन
Exhibition at Onion Day

संस्थागत गतिविधियां

लहसुन बीज उत्पादन इकाई का उद्घाटन

डॉ. एन. के. कृष्ण कुमार, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने प्यालअनुनि में दिनांक 6 जनवरी, 2015 को लहसुन बीज उत्पादन इकाई का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. एस. डी. सावंत, निदेशक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे और डॉ. के. पी. सिंह, निदेशक, भाकृअनुप-पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, पुणे भी उपस्थित थे।

Institutional Activities

Inauguration of Garlic Seed Production Unit

Dr. N. K. Krishna Kumar, Deputy Director General (Horticulture Science), ICAR, New Delhi inaugurated Garlic Seed Production Unit at ICAR-DOGR on January 6, 2015. Dr. S. D. Sawant, Director, ICAR-NRC-Grapes, Pune and Dr. K. P. Singh, Director, ICAR-Directorate of Floricultural Research, Pune were also present on this occasion.



लहसुन बीज उत्पादन इकाई का उद्घाटन
Inauguration of Garlic Seed Production Unit

दावणगिरी में आयोजित एआईएनआरपीओजी की छठी वार्षिक समूह बैठक

प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, राजगुरुनगर, पुणे तथा कृषि एवं बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवमोगा द्वारा दावणगिरी, कर्नाटक में दिनांक 6-7 फरवरी, 2015 को अखिल भारतीय प्याज एवं लहसुन अनुसंधान नेटवर्क परियोजना (एआईएनआरपीओजी) की छठी वार्षिक समूह बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में 60 से भी अधिक प्याज व लहसुन अनुसंधान कर्मियों ने भाग लिया। निजी प्याज बीज उत्पादक कम्पनियों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा राज्य कृषि विभाग के प्रतिनिधि भी इस बैठक में उपस्थित थे। आपसी विचार-विमर्श में कुछ प्रगतिशील किसानों ने भी भाग लिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी. वासुदेवप्पा, कुलपति, कृषि एवं बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवमोगा द्वारा तथा सह-अध्यक्षता डॉ. आर.पी. गुप्ता, निदेशक, एनएचआरडीएफ, नासिक द्वारा की

Sixth Annual Group Meeting of AINRPOG held at Davangere

The 6th Annual Group Meeting of All India Network Research Project on Onion & Garlic (AINRPOG) was organized by ICAR-Directorate of Onion and Garlic Research, Rajgurunagar, Pune at Davangere, Karnataka during 6-7th February, 2015. It was hosted by the University of Agriculture and Horticulture Sciences, Shivamogga. The meeting was attended by more than 60 onion and garlic research workers. Representatives from private onion seed producing companies, KVKs, and state agricultural departments were also present. Some



गई। डॉ. जय गोपाल, निदेशक, प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, राजगुरुनगर ने परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस बैठक में कुल पांच तकनीकी सत्र आयोजित किए गए जिनकी अध्यक्षता एवं सह-अध्यक्षता प्रतिष्ठित आमंत्रित विशेषज्ञों द्वारा की गई। संबंधित प्रधान अन्वेषकों द्वारा विभिन्न नेटवर्क बहु-स्थानिक परीक्षणों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रत्येक प्रस्तुतिकरण के पश्चात् उस पर चर्चा की गई जिससे तकनीकी कार्यक्रम में उल्लेखनीय सुधार का मार्ग प्रशस्त हुआ। डॉ. एन.के. कृष्ण कुमार, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने समापन सत्र की अध्यक्षता की जिसमें विभिन्न सिफारिशों एवं कार्रवाई बिन्दुओं पर गहन विचार-विमर्श किया गया। किसानों की जिज्ञासाओं के भी उत्तर दिए गए। प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय की प्याज की एक किस्म भीमा सुपर की सफलता की कहानी किसानों तथा बीज उत्पादक कंपनियों द्वारा बताई गई। समूह बैठक में लहसुन की एक किस्म जी-386, रबी के लिए प्याज की एक किस्म कोल 744(लाल) तथा खरीफ के लिए प्याज की एक किस्म एनआरसीडब्ल्यूओ-3 (सफेद) को खेती के लिए जारी करने की सिफारिश की गई। पहले से जारी प्याज की किस्में भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड तथा भीमा श्वेता सेट उत्पादन के लिए उपयुक्त पाई गई और इनकी सिफारिश सेटों का उपयोग करके अग्रेती परिपक्वता के लिए खरीफ फसल बढ़ाने के लिए की गई।

निदेशालय की 17वीं अनुसंधान परामर्श समिति (आरएसी) की बैठक

भाकृअनुप- प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय की 17वीं अनुसंधान परामर्श समिति (आरएसी) बैठक का आयोजन डॉ. वाई.एस. नेरकर, पूर्व कुलपति, एमपीकेवी, राहुरी की अध्यक्षता में दिनांक 24-25 मार्च, 2015 को राजगुरुनगर में किया गया। इस बैठक में डॉ. सी.एस. पाठक, सलाहकार, शाकीय अनुसंधान, नाथ बायो-जीन्स

progressive farmers also participated in the deliberations. The inaugural session was chaired by Dr. C. Vasudevappa, Vice-Chancellor, UAHS, Shivamogga and co-chaired by Dr. R.P. Gupta, Director, NHRDF, Nashik. Dr. Jai Gopal, Director, DOGR, Rajgurunagar presented the project report. Five technical sessions were held, which were chaired and co-chaired by renowned invited experts. Dr. N.K. Krishna Kumar, Deputy Director General (HS), ICAR, New Delhi chaired the Plenary Session. Farmers' queries were also answered. The success story of Bhima Super, a DOGR onion variety was narrated by farmers and the seed producing companies. The group meeting recommended one garlic variety G-386, one *rabi* onion variety namely Col.744 (red) and one *kharif* onion variety NRCWO-3 (white) for release. Already released onion varieties Bhima Super, Bhima Dark Red and Bhima Shweta were found suitable for sets production and recommended for raising *Kharif* crop for early harvest using sets.

17th Research Advisory Committee (RAC) Meeting of Directorate

The seventeenth Research Advisory Committee meeting of ICAR-Directorate of Onion and Garlic Research was held during March 24-25, 2015 at Rajgurunagar under the chairmanship of Dr. Y.S. Nerkar, Former VC-MPKV, Rahuri. Other members who attended the meeting were Dr. C.S.



आरएसी बैठक/RAC meeting in progress

लि., औरंगाबाद; डॉ. आर.पी. गुप्ता, निदेशक, एनएचआरडीएफ, नासिक; डॉ. के.एस. रवि, लीडर- शाकीय अनुसंधान, महिको, बेंगलुरु; डॉ. श्रीनिवासन, पूर्व प्रोफेसर, राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली; डॉ. हिमांशु पाठक, प्रोफेसर, पर्यावरण विज्ञान केन्द्र, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली; श्री सूर्यकान्त पलांडे, पूर्व विधायक, शिरूर, पुणे ने भाग लिया। अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में निदेशालय के निदेशक डॉ. जय गोपाल ने नवगठित आरएसी के समक्ष प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के सिंहावलोकन तथा इसके कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। डॉ. वी. महाजन द्वारा कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। संबंधित वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं में की गई प्रगति का प्रस्तुतीकरण किया गया। अनुसंधान परामर्श समिति ने अनुसंधान फार्म एवं प्रयोगशालाओं का भी दौरा किया। समिति सदस्यों ने अनुसंधान गतिविधियों, प्रयोगात्मक खेतों तथा संस्थान के रखरखाव के बेहतर प्रबंधन की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

18 वीं संस्थान अनुसंधान परिषद (आईआरसी) की बैठक

अठारहवीं संस्थान अनुसंधान परिषद (आईआरसी) की बैठक डॉ. जय गोपाल, निदेशक की अध्यक्षता में भाकृअनुप-प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, राजगुरुनगर में दिनांक 6-7 अप्रैल 2015 को आयोजित की गई। इस बैठक में निदेशालय के वैज्ञानिकों ने प्रगति प्रतिवेदन एवं परियोजनाओं की मुख्य उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। वर्तमान अनुसंधान कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण अंतराल के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई और तकनीकी कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया गया। नए शामिल हुए वैज्ञानिकों ने उनकी कार्य योजनाओं को प्रस्तुत किया जिन्हें उचित संशोधनों के साथ मंजूरी दी गई।

Pathak, Advisor-Vegetable Research, Nath Bio-Genes Ltd., Aurangabad, Dr. R.P. Gupta, Director, NHRDF, Nashik, Dr. K.S. Ravi, Leader-Vegetable Research, Mahyco, Bangalore, Dr. Srinivasan, Formerly Professor, NRC for Plant Biotechnology, New Delhi, Dr. Himanshu Pathak, Professor, Centre for Environmental Science, IARI, New Delhi and Mr. Suryakant Palande, Ex-MLA, Shirur, Pune. In his opening remarks, Dr. Jai Gopal presented an overview of DOGR and its programmes to this newly constituted RAC. Action Taken Report was presented by Dr. V. Mahajan. The progress made in various research projects was presented by the respective scientists. RAC also visited research farm and laboratories. They highly appreciated the well management of the research activities, the experimental fields and the upkeep of the institute.

18th Institute Research Council (IRC) Meeting

The eighteenth Institute Research Council (IRC) meeting was held on 6-7 April 2015 at ICAR-Directorate of Onion and Garlic Research, Rajgurunagar under the chairmanship of Dr. Jai Gopal, Director. Scientists of the Directorate presented the progress reports and salient achievements of the projects in the meeting. The critical gaps in the ongoing research programmes were discussed at length and the technical programmes were finalized, which were approved with appropriate modifications.



आईआरसी की बैठक / IRC in progress

स्वच्छ भारत अभियान

इस कार्यक्रम के तहत निदेशालय द्वारा निम्नलिखित गतिविधियां चलाई गई।

1. स्वच्छ भारत अभियान हेतु निर्धारित वार्षिक एवं पंचवार्षिक कार्य योजना के अंतर्गत निदेशालय में नियमित रूप से साफ-सफाई के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हर सप्ताह, बुधवार को निदेशालय के सभी कार्मिक इस अभियान में भागीदारी करते हैं एवं चयनित स्थानों पर साफ-सफाई का कार्य करते हैं।
2. निदेशालय द्वारा चयनित ग्राम शिरोली में हर माह के तीसरे सप्ताह में एक दिन साफ-सफाई का कार्यक्रम किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के लिए निदेशालय के कर्मचारियों को दो समूहों में विभाजित किया गया है। दोनों समूहों के सदस्यों द्वारा गांव में जाकर स्वच्छ भारत अभियान हेतु जागरूकता का प्रसार और कृषि में साफ-सफाई का महत्त्व बताया जाता है। इसके अलावा उन्नत खेती हेतु कृषि की नवीन तकनीकों, रोग से बचाव, बीजोत्पादन, कटाई उपरांत रख-रखाव पर भी जानकारी प्रदान की जाती है। साथ ही खरीफ मौसम में फसल लगाने की आवश्यकता एवं उपयोगिता भी बताई जाती है।
3. निदेशालय में स्वच्छ भारत अभियान के तहत 1 जनवरी, 2015 को नववर्ष के दिन निदेशालय कार्मिकों द्वारा एक मानव श्रृंखला बनाकर निदेशालय द्वार से लेकर चांडोली गांव में भ्रमण किया और स्वच्छता अभियान हेतु जागरूकता का प्रसार किया। निदेशक महोदय ने इस श्रृंखला का नेतृत्व किया और सभी कार्मिकों ने इसमें भाग लिया। गांव के स्कूल के शिक्षकों एवं छात्रों ने भी इस मानव श्रृंखला में भाग लिया और स्वच्छता अभियान हेतु चलाई जा रही इस मुहिम में अधिकतम भागीदारी को सुनिश्चित किया।
4. निदेशालय द्वारा आयोजित सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में किसान एवं अन्य सहभागियों में जागरूकता को प्रचारित किया।



Clean India Campaign

The following activities are implemented by the Directorate under this programme.

1. Regular cleaning programmes are being conducted by the Directorate under Clean India Campaign. Every Wednesday all personnels of the Directorate participate in the campaign and clean the selected locations.
2. In third week of every month cleaning work is done for a day in village Shirolī selected by the Directorate. Staff of ICAR-DOGR has been divided into two groups for this programme. The members of both the groups go to the village and spread awareness about the importance of cleanliness and clean green agriculture. In addition, information is given to the villagers about innovative agricultural techniques for getting high yield, disease prevention, seed production and post-harvest management. The need and usefulness of onion crop cultivation in *kharif* season is also discussed.
3. On 1st January, 2015 awareness programme on cleaning was conducted by making human chain of staff of ICAR-DOGR from the gate of Directorate to village Chandoli. Director, ICAR-DOGR led the human chain. Villagers, school teachers and students also participated and ensured maximum cleanliness in school premises and the village.
4. Awareness is also spread to farmers and other participants of all training programmes organized by the Directorate.



मेरा गांव मेरा गौरव

निदेशालय द्वारा तीन गावों नामतः पाबल, कनेरसर और भोसे की मेरा गांव मेरा गौरव परियोजना के तहत पहचान की गई। इन गावों में प्याज की फसल सभी तीन मौसमों में उगाई जाती है और लहसुन भी छोटे पैमाने में उगाया जाता है। मेरा गांव मेरा गौरव परियोजना में की जाने वाली गतिविधियों के बारे में संबंधित गावों के सरपंच तथा अधिकारियों के साथ चर्चा की गई। उन्होंने अपने गावों में इस पहल के कार्यान्वयन के लिए पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। भाकृअनुप-प्यालअनुनि के वैज्ञानिक ग्रामीणों के लगातार संपर्क में रहेंगे और किसानों द्वारा विभिन्न फसलों की खेती में विभिन्न तकनीकी मुद्दों पर बातचीत करने के लिए गावों का दौरा करेंगे।

जनजातीय उप-परियोजना के अंतर्गत गतिविधियां

कृषि विज्ञान केन्द्र, नन्दुरबार के सहयोग से जनजातीय उप-परियोजना के तहत नन्दुरबार के जनजातीय क्षेत्र में 'प्याज व लहसुन की वैज्ञानिक खेती' विषय पर तीन प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम आयोजित किए गए। पहला प्रक्षेत्र दिवस सरस्वती महिला बचत गट, पालीपाड़ा के खेत में दिनांक 19 मार्च, 2015 को; दूसरा जय गणेश शेतकरी गट, निम्बोनी के खेत में दिनांक 20 मार्च, 2015 को तथा तीसरा प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम जय किसान शेतकरी गट, पालशी के खेत में दिनांक 21 मार्च, 2015 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.जे. गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) एवं नोडल अधिकारी (जनजातीय उप-परियोजना स्कीम) एवं श्री वी.आर. यलामल्ले, वैज्ञानिकी (बीज प्रौद्योगिकी) द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में नन्दुरबार के विभिन्न भागों के कुल 200 किसानों ने भाग लिया। किसानों को प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय की प्रौद्योगिकियों को अपनाने तथा प्याज व लहसुन की खेती व्यावसायिक फसल के रूप में करने की सलाह दी गई। डॉ. गुप्ता ने प्याज व लहसुन की वैज्ञानिक खेती पर व्याख्यान दिया। श्री. वी.आर. यलामल्ले ने प्याज में गुणवत्ता बीज उत्पादन पर व्याख्यान दिया। प्याज की किस्म भीमा शक्ति के कंद उत्पादन पर 16 प्रदर्शनों, भीमा ओमकार के लहसुन उत्पादन पर 2 प्रदर्शनों तथा प्याज किस्मों भीमा किरन, भीमा राज, भीमा शुभ्रा व भीमा श्वेता के बीज उत्पादन पर 6 प्रदर्शनों सहित कुल 24 प्रदर्शनों का आयोजन नन्दुरबार को नवापुर तालुका में किया गया। आयोजित सभी प्रदर्शनों में प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय की सिफारिशों के अनुपालन में ड्रिप सिंचाई का उपयोग किया गया।

Mera Gaon Mera Gaurav

The Directorate has identified three villages viz., Pabal, Kanersar and Bhoose under *Mera Gaon Mera Gaurav* project. In these villages, onion crop is grown in all three seasons and garlic is also grown in small scale. The activities to be undertaken in *Mera Gaon Mera Gaurav* project have been discussed with village officials and sarpanch of the respective villages. They assured full cooperation for implementation of this initiative in their villages. The scientists of ICAR-DOGR will be in constant touch with the villagers and will visit identified villages to address various technical issues in cultivation of various crops by the farmers.

Activities under TSP

Three field day programmes on "Scientific cultivation of onion and garlic" were organized in tribal belt of Nandurbar under TSP scheme in collaboration with KVK, Nandurbar. First field day was organized on 19th March, 2015 at the field of Saraswati Mahila Bachat Gat, Palipada; second was organized on 20th March, 2015 at the field of Jai Ganesh Shetkari Gat, Nimboni whereas third on 21st March, 2015 at the field of Jai Kisan Shetkari Gat, Palshi. The programme was coordinated by Dr. A. J. Gupta, Sr. Scientist (Hort.) & Nodal Officer (TSP Scheme) and Mr. V. R. Yalamalle, Scientist (Seed Tech.). A total of 200 farmers participated in the programme from different parts of Nandurbar. The farmers were advised to adopt the technology of DOGR and take up the onion and garlic as commercial crop. Dr. Gupta delivered lectures on scientific cultivation of onion and garlic whereas Mr. V. R. Yalamalle delivered lecture on production of quality seed in onion. A total of 24 demonstrations were conducted in Navapur taluka of Nandurbar including 16 demonstrations on bulb production of onion variety Bhima Shakti, 2 demonstrations on production of garlic variety Bhima Omkar and 6 demonstrations on seed production of onion varieties Bhima Kiran, Bhima Raj, Bhima Shubhra and Bhima Shweta. All demonstration trials were laid on drip irrigation as per DOGR recommendations.



जनजातीय उप-परियोजना के तहत प्रदर्शन
A demonstration under TSP

प्रशिक्षणों का आयोजन / Trainings organized

प्रशिक्षण का शीर्षक Topic of Training	द्वारा प्रायोजित Sponsored by	तारीख व स्थान Date and Venue	प्रतिभागियों की संख्या No. of participants
प्याज एवं लहसुन की वैज्ञानिक खेती Scientific Cultivation of Onion and Garlic	आत्मा परियोजना के तहत नर्मदा झाबुआ ग्रामीण बैंक, देवास, मध्य प्रदेश Narmada Jhabua Gramin Bank, Dewas, Madhya Pradesh under ATMA scheme	16-18 मार्च, 2015 भाकृअनुप-प्यालअनुनि, राजगुरुनगर March 16-18, 2015 ICAR-DOGR, Rajgurunagar, Pune	जिला देवास, मध्य प्रदेश से 25 किसान 25 farmers from District Dewas, M.P.
प्याज फसल उत्पादन Onion Crop Production	जिंदल क्रॉप साइन्सेस प्रा. लि., जालना Jindal Crop Sciences Pvt. Ltd., Jalna	28-29 अप्रैल 2015 भाकृअनुप-प्यालअनुनि, राजगुरुनगर April 28-29, 2015 ICAR-DOGR, Rajgurunagar, Pune	महाराष्ट्र से 60 बीज उत्पादक एवं वितरक 60 seed producers and distributors from Maharashtra
खरीफ प्याज उत्पादन प्रौद्योगिकी Kharif Onion Production Technology	जनजातीय उप-परियोजना, भाकृअनुप-प्यालअनुनि, राजगुरुनगर TSP, ICAR-DOGR, Rajgurunagar	16-17 जून, 2015 भाकृअनुप-प्यालअनुनि, राजगुरुनगर June 16-17, 2015 ICAR-DOGR, Rajgurunagar, Pune	जिला नंदुरबार, महाराष्ट्र से 84 किसान 84 farmers from District Nandurbar, Maharashtra



आत्मा परियोजना के तहत प्रशिक्षण
Training under ATMA scheme



बीज उत्पादकों एवं वितरकों के लिए प्रशिक्षण
Training for seed producers and distributors



जनजातीय उप-परियोजना के तहत प्रशिक्षण
Training under Tribal Sub-Plan



प्रदर्शनियों में सहभाग/Participation in Exhibitions

भाकृअनुप-प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने निम्नलिखित प्रदर्शनियों में भाग लिया :-

ICAR-DOGR participated in following exhibitions:-

प्रदर्शनी Exhibition	आयोजक Organizer	दिनांक Date	स्थान Venue
बागवानी-उद्योग आमुख बैठक Horticulture-Industry Interface meet	आईआईएचआर, बेंगलुरु IIHR, Bengaluru	10 फरवरी, 2015 February 10, 2015	आईआईएचआर, बेंगलुरु IIHR, Bengaluru
विज्ञान दिवस प्रदर्शनी Science Day Exhibition	जीएमआरटी, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, खोड़द, नारायणगांव GMRT, Tata Institute of Fundamental Research, Khodad, Narayangaon	28 फरवरी-1 मार्च, 2015 February 28- March 1, 2015	जीएमआरटी, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, खोड़द, नारायणगांव GMRT, TIFR, Khodad, Narayangaon
बागवानी मेला 'हॉर्टी संगम' Horticulture Fair 'Horti-Sangam'	राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, गुडगांव National Horticulture Board, Gurgaon	10-12 अप्रैल, 2015 April 10-12, 2015	गांधी मैदान, मोतिहारी, बिहार Gandhi Maidan, Motihari, Bihar
किसान मेला Farmers Fair	कृषि विज्ञान केंद्र, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. Krishi Vigyan Kendra,	27 जून, 2015 June 27, 2015 Muzaffarnagar, U.P.	कृषि विज्ञान केंद्र, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. Krishi Vigyan Kendra,



भाकृअनुप-प्यालअनुनि का विज्ञान दिवस प्रदर्शनी में सहभाग
Participation of ICAR-DOGR in Science Day
Exhibition



कृविके मुजफ्फरनगर में किसान मेला में डॉ.संजीव कुमार
बलयान, कृषि राज्य मंत्री की प्यालअनुनि के स्टाल को भेट
Vist of Dr. Sanjeev Kumar Balyan, Agriculture Minister
of State to ICAR-DOGR stall during Farmers Fair at
KVK Muzaffarnagar

खेलकूद प्रतियोगिता में सहभाग

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की आंतर क्षेत्रिय खेलकूद प्रतियोगिता एनडीआरआई, करनाल में 11-14 मार्च, 2015 के दौरान संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में परिषद के 45 संस्थान के कुल 448 प्रतियोगी सम्मिलित हुई। इस संस्थान के वैज्ञानिक श्री. मंजुनाथ गौडा ने लंबी कूद में रजत पदक तथा 100 मीटर एवं 200 मीटर दौड़ स्पर्धा में कांस्य पदक जीते। इस सराहनीय जीत के लिए निदेशक महोदय ने उनका अभिनंदन किया।

Participation in Sports Tournament

ICAR-DOGR participated in ICAR Inter Zonal Sports Tournament held at NDRI, Karnal during 11-14 March, 2015. Shri. Manjunatha Gowda, a scientist of this Institute received silver medal in long jump and two bronze medals in 100 m & 200 m race. Director congratulated him on his remarkable victory.

प्याज की खेती करने वाले किसान ने प्राप्त किया अभिनव किसान पुरस्कार

देऊलगांव, जिला अकोला (महाराष्ट्र) के एक प्रगतिशील किसान श्री. नामदेवराव अढाऊ ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में 10-12 मार्च 2015 के दौरान आयोजित पूसा कृषि विज्ञान मेला में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा अभिनव किसान पुरस्कार प्राप्त किया। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में प्याज की खेती करने में योगदान के लिए श्री. नामदेवराव यादवराव अढाऊ को पुरस्कार के लिए इस निदेशालय द्वारा नामित किया गया था। भाकृअनुप-प्यालअनुनि के प्रशिक्षु रह चुके श्री. अढाऊ ने भाकृअनुप-प्यालअनुनि द्वारा विकसित एक सफेद प्याज किस्म भीमा शुभ्रा को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है।

Onion Farmer bags Innovative Farmer Award

Shri. Namdeorao Adhau, a progressive onion farmer of Deulgaon, District Akola (M.S.) received Innovative Farmer Award of IARI, New Delhi at Pusa Krishi Vigyan Mela held at IARI during 10-12 March, 2015. Shri. Namdeorao Yadavrao Adhau was nominated by this Directorate for his contribution to onion cultivation in Vidarbha region of Maharashtra. Once a trainee of ICAR-DOGR, Shri. Adhau has popularized 'Bhima Shubhra' – a white onion variety developed by ICAR-DOGR, Pune.



श्री. एन. वाई. अढाऊ पुरस्कार लेते हुए
Sh. N. Y. Adhau receiving award

कार्मिक / Personnel

कार्यभार ग्रहण / Joining



श्री. कुलदीप
वैज्ञानिक (जैव प्रौद्योगिकी)
9 अप्रैल, 2015
Sh. Kuldip
Scientist (Biotechnology)
April 9, 2015

श्री. विशाल एस. गुरव
तकनीकी सहायक (फील्ड/फार्म)
16 जनवरी, 2015

Sh. Vishal S. Gurav
Technical Assistant (Field/Farm)
January 16, 2015



भाकृअनुप-प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय

राजगुरुनगर, पुणे-410 505, महाराष्ट्र, भारत

दूरभाष: 02135- 222026, 222697, फैक्स: 02135- 224056 ईमेल: director.dogr@icar.gov.in

वेब: <http://www.dogr.res.in>

ICAR-Directorate of Onion and Garlic Research

Rajgurunagar – 410 505, Pune, Maharashtra, India

Phone: 02135-222026, 222697 Fax: 02135-224056 E-mail: director.dogr@icar.gov.in

Website : <http://www.dogr.res.in>

